लिङ्क - रवि शंकर राय, विषय - अर्थशास्त्र
दिनांक - 04-10-2020, वर्ग - BA-III

प्रश्न - 'सामरिक साम्यवाद' को जन्म देने वाली परिस्थितियों की व्याख्या कीजिये। इसका क्या उद्देश्य थे और वे कहाँ तक पूरे हो पाए?
Discuss the circumstances leading to War Communism. What were its objectives and how far were they fulfilled?

उत्तर :- मिश्रित पूँजी बैंकों का राष्ट्रीयकरण करके 14 दिसम्बर 1917 को उन्हे स्टेट बैंक में विलीन कर दिया। निजी उद्योगों पर सरकारी नियंत्रण हुं दिसम्बर 1917 में 'सर्वोच्च आर्थिक परिषद' का गठन किया गया।

राजकीय पूँजीवाद का परित्याग ⇒ सोवियत सरकार ने नवम्बर 1917 से लेकर जून 1918 तक राजकीय पूँजीवाद की नीति का अनुसरण किया। जून 1918 में गृह-युद्ध आरंभ होने पर सरकार को राजकीय पूँजीवाद की नीति छोड़नी पड़ी तथा सामरिक साम्यवाद की नीति अपनानी पड़ी। 28 जून 1918 को सामान्य राष्ट्रीयकरण की आज्ञप्ति जारी

करते हुए सरकार ने सभी बड़े-बड़े उद्योगों का एक साथ राष्ट्रीयकरण कर डाला। जिन कारखानों में 10 लाख रुबल से अधिक की पूँजी विनियोजित थी, उन्हे सरकारी अधिकारों में ले लिया गया। तत्पश्चात सोवियत रूस में राष्ट्रीयकरण की धूम-सी मच गई तथा मार्च 1919 तक लगभग 4 हजार कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण किया गया। सोवियत सरकार द्वारा राजकीय पूँजीवाद की नीति का परित्याग निम्न कारणों से किया गया था—

(1) औद्योगिक क्षेत्र में अव्यवस्था— राजकीय पूँजीवाद के अन्तर्गत औद्योगिक नियंत्रण हेतु द्वैध शासन (Diarchy) की व्यवस्था की गई थी। श्रमिकों की समितियों का 'औद्योगिक प्रबन्ध पर नियंत्रण' का अर्थात उद्योग पर नीचे से नियंत्रण रखने का अधिकार प्राप्त था। उद्योगों पर ऊपर से नियंत्रण रखना सर्वोच्च आर्थिक परिषद का उत्तरदायित्व था। सरकार ने सामान्य राष्ट्रीयकरण की बजाय निजी उद्योगों पर कठोर नियंत्रण की नीति अपनायी थी। परन्तु औद्योगिक क्षेत्र में नियंत्रण पूँजीवाद की नीति सफल नहीं हो पाई। अनेक मजदूर-समितियों ने सरकारी आज्ञा की अवहेलना करते हुए उद्योगों

को अपने अधिकार में ले लिया। ~~फलत:~~
~~जिससे~~
(2) कच्चे-माल और ईंधन की कमी — महायुद्ध के समय औद्योगिक कच्चे-माल का आयात बन्द हो गया। अत: कच्चे-माल की न्यूनता के कारण बहुत से उद्योग बन्द हो गए। बाकू, ग्रोजनी और डोनवास से खनिज तेल की आपूर्ति बन्द हो जाने के कारण ईंधन की कठिनाइयां बढ़ गई। 1916 और 1917 की अपेक्षा 1919 में ईंधन की आपूर्ति क्रमश: 50 प्रतिशत रह गई। खनिज लोहा का 60 प्रतिशत उत्पादन डानेट्ज से, 19 प्रतिशत यूराल से तथा 4 प्रतिशत पोलैण्ड से प्राप्त होता था। इन क्षेत्रों पर दूसरो की कब्जा हो जाने से रूस के लौह उद्योग की स्थिति दयनीय हो गई। धमन-भट्टियों की संख्या 1918 में 13 से घटकर 1919 में 9 और 1920 में केवल 5 रह गई। रोलिंग मिलों की संख्या 1918 में 15 से घटकर 1920 मे केवल 7 रह गई। ढले हुए लोहे का उत्पादन 1918 मे 37 लाख

पूड़ों से घटाकर 1920 में केवल 3 लाख थे रह गया। कपास की न्यूनता के कारण इसी वस्त्र उद्योग की स्थिति अत्यन्त शोचनीय बन गई।

(2) उत्पादन और व्यापार में गिरावट — गृह-युद्ध के समय कई औद्योगिक केन्द्र रूस के हाथ से निकल गए। रूस का 30 प्रतिशत निर्यात 35 प्रतिशत आयात व्यापार बाल्टिक महासागर तट के बंदरगाहों से गुजरता था। गृह-युद्ध के समय ये बन्दरगाह रूसी अधिकार-क्षेत्र से बाहर निकल गए। 1918 से लेकर 1921 तक रूस के औद्योगिक उत्पादन में 70 प्रतिशत की कृषि-उत्पादन में 37 प्रतिशत उतारता माना गया। केन्द्रीय सोवियत प्रबंधकीरिणा कमीटी के चाल अधिवेशन में कैरेलिन (Karelin) ने मध्यवर्गीय इन्जीनियरों एवं अर्थशास्त्रियों की सेवाएँ स्वीकार किए जाने की। लेनिन का बुर्जुआ वर्ग के साथ समझौता मानते हुए प्रबल विरोध किया।

(3) गृह-युद्ध — जून 1918 में रूस में गृह-युद्ध छिड़ गया। इस समय फ्रांस और ब्रिटेन सरीखी विदेशी शक्तियों ने रूस में अपनी सेनाएँ भेजकर बोल्शेविक शासन का अन्त कर देना

चाहते। रूस के पूँजीपति विदेशी सहायता से प्रति-क्रांति करना चाहते थे। गृह-युद्ध के प्रारंभ में सोवियत सरकार की स्थिति कमजोर पड़ गई थी। अतः बहुत बड़े क्षेत्र पर इसका नियंत्रण समाप्त हो गया। मौरिस डॉब के शब्दों में "सामग्रियों की न्यूनता उद्योगों को पंगु बनाने की धमकी दे रही थी तथा अकाल मास्को एवं पेट्रोग्राड की गलियों में टहलने लगा था।" अन्ततः किसानों और श्रमिकों के सहयोग से बोल्शेविक सरकार विदेशी आक्रमणकारियों को खदेड़ने तथा प्रति क्रांति को रोकने में सफल हुई। गृह-युद्ध की उपस्थिति राजकीय पूँजीवाद के परित्याग का सबसे प्रबल कारण था।